02 जून 2023, जून (द्वितीय) • कुल पृष्ठ : 8 • मूल्य : 2/- • वर्ष : 46 • अंक : 5

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

# जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

सह-सम्पादक : पीयूष जैन

# संकल्प दिवस

आजीवन शुल्क : 251 रुपये

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आर. एन. आई. 31109/77

JaipurCity / 224 / 2021-23

## डॉ. भारिल्ल द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान के महायज्ञ को अनवरत जारी रखने के लिए...

## संकल्पित हुए सैकड़ों स्नातक विद्वान

**ग्वालियर :** श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में आगत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जन्मदिवस को प्रतिवर्ष संकल्प दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। इस वर्ष उनके 89वे जन्मदिवस के अवसर पर उनकी स्मृति में प्रशिक्षण शिविर, ग्वालियर में 25 मई 2023 को सैकड़ों स्नातक विद्वानों द्वारा एक बार फिर इस तत्त्वज्ञान की धारा को अनवरत जारी रखने का संकल्प लिया गया।

समारोह की अध्यक्षता मुमुक्षु आश्रम, कोटा के संस्थापक श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में दि. जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या, इंदौर; श्री सुरेशचंद जैन, शिवपुरी; श्री बिपिन शास्त्री, मुंबई; श्री मंगलसेन जैन, दिल्ली; श्री सुनील जैन, विश्वासनगर; श्री सुशीलकुमार गोदीका, जयपुर; श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुंबई; डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर; डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ; श्री वीरेंद्र गंगवाल, ग्वालियर; श्री मुकेश जैन, ग्वालियर; श्री सुनील जैन, ग्वालियर; श्री सुशील जैन, ग्वालियर; श्री अजय जैन, ग्वालियर; डॉ. जिनेंद्र शास्त्री, उदयपुर; श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, जयपुर; श्रीमती सोनल जैन, इंदौर; श्रीमती संस्कृति गोधा, जयपुर आदि अनेक अतिथि मंचासीन थे। इसके अतिरिक्त सैकड़ों स्नातक विद्वान एवं लगभग 1000 साधर्मी उपस्थित रहे।

सभा अध्यक्ष **श्री प्रेमचंद्र बजाज, कोटा** ने कहा कि दादा ने जीवनभर तत्त्वप्रचार कर गुरुदेवश्री के उपकार को चुकाया है। उसीप्रकार हमें भी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में जीवन समर्पित कर दादा के उपकार को चुकाने का संकल्प लेना है।

**श्री अशोक बड़जात्या, इंदौर** ने कहा कि जैनसमाज में प्रवचन के स्तर को उत्कृष्ट बनाने वाले डॉ. भारिल्ल ही हैं, उन्होंने गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान को बिना किसी मिलावट के पूर्ण शुद्धता के साथ आगे बढ़ाया है। दादा एक संत हैं; क्योंकि निश्चित ही उनके संसार का अंत आ गया है।

**श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर** ने कहा कि दादा अपने जीवन में जो भी कर पाये वह उनकी योग्यता और क्षमता के सामने नगण्य है; क्योंकि उनका अधिकांश समय व क्षमताएँ तो मार्ग में आए अवरोधों और विरोध को दूर करने में ही व्यतीत को गईं। यदि हमें दादा को गुरुदक्षिणा के रूप में कुछ देना है तो हम युवा विद्वानों के मार्ग के अवरोधों व विरोधों को दूर करें; ताकि उनकी सारी क्षमता समाज को कुछ प्रदान करने में काम आए।

**श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुंबई** ने कहा कि जब तक हमारे पास तत्त्वज्ञान है, मुक्ति के मार्ग पर चलने की ललक है, तब तक दादा हमारे साथ हैं। दादा ने जो सबसे बड़ा काम किया वह यह कि उन्होंने गुरुदेवश्री के अध्यात्म को 50 साल का एकस्टेंसन दिया है।

**श्री बिपिन शास्त्री, मुंबई** ने कहा कि दादा विरोधी समाज में भी गए, लेकिन उनका विरोध नहीं हुआ; क्योंकि उनके पास ऐसी तर्कशक्ति थी, जिससे वह सभी को अपनी बात समझा देते थे। दादा ने कभी भी तत्त्वज्ञान के साथ समझौता नहीं किया और यही हमें उनसे सीखना है।

**डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर** ने कहा कि दादा ने हमें न कभी झुकना सिखाया और न ही लड़ना। वे कहते थे कि झुकना है तो अंतर में झुकों और लड़ना है तो अज्ञान से लड़ो। हम संकल्प भी लें और उस संकल्प को क्रियान्वित भी करें।

सम्पादक की कलम से...

# तत्त्वप्रचार और डॉ. भारिल्ल

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल
कार्यकारी महामंत्री – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

**इस कलिकाल के भागीरथ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के माध्यम से इस युग में तीर्थंकर व गणधरदेवों और वीतरागी निर्ग्रन्थ संतों की भवतापहारी देशना का आविर्भाव हुआ।** पूज्य गुरुदेवश्री का स्वाध्याय तो स्वांत:सुखाय था ही, भरी सभा में भी उनका प्रवचन मात्र स्वयं के लक्ष्य से ही होता था। विशाल सभा के बीच भी वे इस प्रकार तन्मय होकर, गदगद होते हुए व्याख्यान करते थे मानो जंगल में मोर नाच रहा हो, सबसे अलिप्त, सबसे वेपरवाह, स्वयं में मगन...

**इसका तात्पर्य यह नहीं कि उन्हें तत्त्वप्रचार का विकल्प ही न था।** यदि विकल्प न होता तो जेठ की भरी दोपहरी, तपती धूप में दिन के 3 बजे अपने कक्ष से चलकर स्वाध्याय भवन तक क्यों आते? तत्त्वप्रचार की कोमल भावना से देशभर में भ्रमण क्यों करते?

**यदि तत्त्वप्रचार की भावना, गतिविधियाँ और क्रियाकलाप भूमिकानुसार स्वाभाविक न होते, महान न होते और एक आत्मार्थी के लिए कर्तव्य न होते तो तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि क्यों होती। गणधरदेव उस परम्परा का पालन क्यों करते। तीन कषाय के अभावरूप वीतरागता के धनी निर्ग्रन्थ आचार्यदेव, उपाध्यायों और मुनिराजों को उपदेश देने का और ग्रन्थ–लेखन का विकल्प क्यों आता, वे उस विकल्प की पूर्ति में तत्पर क्यों होते?**

**यदि उपरोक्त वर्णित कोई उपक्रम न होता तो आज हमारा क्या होता? क्या यह दिव्यदेशना हम तक पहुँच पाती?**

यदि दादा की भाषा में कहें, तो – यदि इस उपक्रम में सातत्य न होता, यानिकि अगर ये प्रयास निरंतर न चलते, अगर महावीर से लेकर आजतक कभी भी, किसी एक कालखंड में भी इन गतिविधियों में ठहराव आ जाता, **किसी भी कारण से ये तत्त्वप्रचार का काम रुक जाता तो आज यह धारा हम तक न पहुँचती।**

पर ऐसा होता कैसे?

निकट–भव्य जीवों के भाग्य से हर काल में निरन्तर ऐसे उपकारी महापुरुषों का आविर्भाव होता रहा, जिनमें आत्मकल्याण के साथ–साथ अन्य भव्य–जीवों के कल्याण की भावना भी बलवती रही और उनके निमित्त से यह क्रम निरंतर बना रहा।

जैसाकि सदा ही होता रहा है, पूज्य गुरुदेवश्री के समय भी अनेकों गहन स्वाध्यायी, आत्मार्थी विद्वान ऐसे रहे जिनकी प्राथमिकता मात्र आत्मकल्याण रही और वे मात्र निज तक ही सीमित रहे, **यथा – पूज्य बहिनश्री एवं शांताबहिन, पंडित रामजीभाई और पंडित हिम्मतभाई आदि, तथापि आदरणीय सर्वश्री खीमचन्दभाई, लालचंदभाई, बाबूभाई, युगलजी एवं नेमीचंदजी पाटनी** जैसे अनेकों ऐसे वरिष्ठ विद्वान थे, जिनमें आत्मकल्याण के साथ–साथ तत्त्वप्रचार की भावना भी बलवती थी और वे इस कार्य में सक्रिय भी रहे।

**उक्त महानुभावों में आदरणीय बाबूभाई मेहता का एक विशिष्ट योगदान रहा,** जिन्होंने उत्तर–भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों में जाकर समाज को पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान से परिचित करबाया, और उन्हें सोनगढ़ आने की प्रेरणा दी। **उनके व्यक्तित्व की गरिमा, स्वभाव की सरलता, आचरण की पवित्रता और जीवन की सादगी** का समाज पर बड़ा प्रभाव पड़ा और लोग उनकी प्रेरणा से तत्त्वज्ञान के प्रति आकर्षित हुए। उनमें से कई लोग सोनगढ़ गए और अपने साथ जो तत्त्वज्ञान ले आये, उसे उन्होंने सामाज में प्रसारित किया और अन्य अनेक लोगों को तत्त्वज्ञान एवं उसके प्रणेता पूज्य गुरुदेवश्री की ओर आकर्षित किया।

**इस विधि से पूज्य गुरुदेवश्री स्वयं और उनका यह तत्त्वज्ञान सोनगढ़ व गुजरात की सीमा से निकलकर हिन्दीभाषी क्षेत्रों में पहुँचा।**

**इस क्रम में यह तत्त्वज्ञान दादाद्वय तक भी तब पहुँच गया जब उनकी उम्र मात्र 24 और 22 बर्ष की थी।**

अब तक दादा शास्त्री और न्यायतीर्थ तो हो ही चुके थे, न्यायशास्त्र और व्याकरण पर भी उनकी पकड़ बड़ी गहरी थी। साहित्यिक प्रतिभा तो उनमें जन्मजात ही थी और अब तक अपनी 17–18 साल की उम्र में ही वे (छोटे दादा) **'पश्चाताप' (खंड काव्य) और 'वैराग्य' (महाकाव्य)** की रचना भी कर चुके थे। इसके साथ ही देव–शास्त्र–गुरु पूजन की रचना और पूज्य गुरुदेवश्री से उनका मिलन लगभग समकालीन घटनाएँ हैं।

**उक्त तीनों रचनाओं से उनकी बेजोड़ काव्य प्रतिभा तो सामने आई ही, जो मात्र छंद और अलंकारों की दृष्टि से ही अत्यंत समृद्ध न थे वरन पश्चाताप और वैराग्य उनकी अद्भुत तर्क–शक्ति और लीक से हटकर सोचने की उनकी शैली और क्षमता के भी अद्भुत उदाहरण थे। देव–शास्त्र–गुरु पूजन ने उनकी देव–शास्त्र–गुरु के स्वरूप की सम्यक समझ को प्रकट कर दिया था। इस रचना से यह स्पष्ट था कि वे धर्म के मूल सिद्धांत, यथा – वीतरागता, सर्वज्ञता, अकर्तापन और क्रमबद्धपर्याय को अच्छी तरह समझते थे।**

उनकी उक्त सहज प्रतिभा और न्याय–व्याकरण की व्यवस्थित शिक्षा के सुमेल से वे एक सक्षम और प्रभावशाली विद्वान बनकर यत्र–तत्र अपनी विद्वत्ता का लोहा भी मनबा चुके थे और पूज्य गुरुदेवश्री के संयोग ने उन्हें जैनदर्शन के आत्मकल्याणकारी अध्यात्म से भी परिचित करवा दिया, अब वे आत्मार्थी होगये थे।

**अब आग दोनों ओर एक सामान थी –**

**एक ओर दादाद्वय को एक ऐसे सक्षम आत्मार्थी गुरु (गुरुदेवश्री)**

**मिल गए, जिसके पास स्वपरीक्षित साधना से समृद्ध भवातापहारी जैन अध्यात्म का मर्म था, जो स्वयं वृत्ति से निस्पृह और संसार से उदास थे, जिनमें त्याग का तेज और स्वाध्याय की गरिमा थी, जो एक संतहृदय श्रावक थे।**

**दूसरी ओर पूज्य गुरुदेवश्री को ऐसे सक्षम गणधर (दोनों दादा) मिल गए थे जो उनके द्वारा उद्घाटित धर्म के मर्म को सहज ही समझ लेते थे। इतना ही नहीं उनमें तत्त्व की उस गूढ़ बात को सामान्यजन के सामने उनकी ही भाषा और रोचक शैली में तर्कपूर्ण ढंग से हृदयंगम करवा देने की, और उसे उनसे स्वीकृत करवा लेने की बेजोड़ क्षमता थी। उनमें इसके प्रति उत्साह और सम्पूर्ण समर्पण भी था। वे दूरदर्शी और अध्यवसाई तो थे ही; निडरता, स्वाभिमान और निस्पृहता से ओतप्रोत वे दोनों भाई अभी तरुण अवस्था में ही थे और उनके पास इस तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए अभी पर्याप्त ऊर्जा, इच्छाशक्ति और समय था।**

**यह संयोग ऐसा था मानो धरसेन (पूज्य गुरुदेवश्री) को सहज ही भूतबली और पुष्पदंत (दोनों दादा) मिल गए हों।**

बस! फिर क्या था? न तो गुरुदेव ने अपनी निधियाँ लुटा देने में कसर छोड़ी और न ही दादा ने उन निधियों को बटोरकर देश–देशांत के आत्मार्थियों तक, हर गाँव–गली तक, जन–जन तक पहुँचाने में। और इसप्रकार पूज्य गुरुदेवश्री के महाप्रयाण को लगभग 43 वर्ष बीत गए और यह कारवां आज तक दिन–दूना, रात–चौगुना बढ़ता ही गया।

ऐसा भी नहीं था कि यह सब कुछ आसानी के साथ निर्बाध रूप से चलता रहा। **बड़े–बड़े अनेकों अवरोध आये, जबर्दस्त प्रतिरोध हुआ, विरोध हुआ, पर दादा की नीतियों और सूझबूझ ने इन सबको बेअसर कर दिया। मुमुक्षु समाज के अंदर से उपस्थित चुनौतियां पूज्य गुरुदेवश्री के भरपूर आशीर्वाद के समक्ष ठहर न सकीं और बाहर की चुनौतियों का सामना दादा ने अपनी अतुल्य धीरता के साथ किया। दादा की समभाव की नीति, समाज के प्रति उनका अगाध समर्पण, अपने सिद्धन्तों से समझौता न करते हुए समाज की एकता बनाये रखने के प्रति उनकी कटिबद्धता, विरोधियों के प्रति भी उनकी सहिष्णुता, किसी से बैर–विरोध न रखने का उनका स्वभाव, मतवैभिन्नता के बाबजूद संवाद कायम रखने की उनकी नीति और प्रयत्न तथा उनके विराट व्यक्तित्व व विशाल कृतित्व और उनकी असंदिग्ध, अगाध विद्वत्ता, उद्यमशीलता और तत्त्वप्रचार के अपने लक्ष्य के प्रति उनके सम्पूर्ण समर्पण जैसे उनके बेजोड़ गुणों के कारण समाज का (उनसे असहमत लोगों का भी) उनके प्रति अप्रतिम आदरभाव;** ये सभी ऐसे कारण थे कि कालान्तर में उनसे असहमत लोग भी उनके विरोधी न रहे, इसप्रकार कोई शक्ति उन्हें रोक न सकी, कोई भी चुनौती उनके मार्ग का अवरोध न बन सकी।

इतना अवश्य है कि **उक्त अवरोधों और विरोधों से निपटने में उनकी जिस शक्ति, क्षमता और समय का अपव्यय हुआ, वह उनके तत्त्वप्रचार के रचनात्मक प्रयासों में से कट गया। यदि उनकी वह ऊर्जा भी जो इन सबसे निपटने में अपव्यय हुई, यदि इन्हीं रचनात्मक कार्यों में लगती तो और किस चमत्कार का सृजन करती, यह कल्पना सहज ही की जा सकती है।**

यह एक स्थापित तथ्य है कि सहमति हो या असहमति पर अपने विरोधियों के बीच भी वे अपार स्नेह और सम्मान के पात्र रहे। उनसे असहमत रहे लोग भी सदैव उनके साहचर्य के लिए लालायित दिखाई दिए, उनसे मिलकर अहोभाव का अनुभव करते रहे और इसप्रकार सभी के साथ उनके वात्सल्यपूर्ण संबंधों के विकास के साथ–साथ **कालक्रम में उनके प्रति विरोध का भाव स्वत: शमित होता गया, वे अजातशत्रु हो गए।**

दादा के सतत, विविध प्रयासों के फलस्वरूप दादा के पूज्य गुरुदेवश्री से संपर्क में आने के बाद के इन लगभग 66 वर्षों में तत्कालीन विद्वानों, श्रेष्ठिओं और समाज का नेतृत्व करने वाले वर्ग में पूज्य गुरुदेवश्री के प्रदेय के प्रति असहमति और विरोध लगभग ख़त्म होगये।

**इस काल–खंड में वह समयसार जिसका स्वाध्याय पहिले सामान्यजन के लिए निषिद्ध माना जाता था, देश–देशांतर में घर–घर पहुँच गया। जन–जन में चर्चा, स्वाध्याय और चिंतन की वस्तु बन गया।**

**समाज का वह वर्ग जो इन्हें हेय कहा करता था, आज स्वयं गौरव के साथ विशाल जनसभाओं में समयसार के ऊपर व्याख्यान करने लगा हैं. आपके मुख से समयसार सुनना चाहता है और आपसे मिलन को, चर्चा और वार्तालाप को अपने जीवन का सौभाग्य मानने लगा है।**

**वह क्रमबद्ध पर्याय जिसके अस्तित्व से ही इंकार किया जाता था या जिसे पुरुषार्थ की घातक करार दे दिया गया था, आज सम्पूर्ण समाज में वस्तु स्वातंत्र्य और आत्मशान्ति का मूल मन्त्र स्वीकार किया जाने लगा है।**

**वह नयों की चर्चा जो समाज में विघटन का कारण मानी जाती थी; आज वस्तु स्वरूप की सम्यक समझ के उपकरण के रूप में स्वीकार कर ली गई है।**

**आज बहुसंख्य समाज के बीच पुण्य और पाप दोनों ही आस्रवों को बंध का कारण जानकर–मानकर हेय स्वीकार किया जाने लगा है।**

**आज जिनवाणी मात्र पूजने की नहीं वरन स्वाध्याय की वस्तु बन गई है। स्वाध्याय, धर्मप्रेमी समाज के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है और आबाल–वृद्ध सभी बड़ी संख्या में इस उपक्रम के अंग बन गए हैं।**

यह तो **शासन प्रभावना का महान योग ही था कि गुरु–शिष्य (पूज्य गुरुदेवश्री एवं दोनों दादा) के मिलन के बाद लगभग 23 वर्षों तक गुरु को शिष्यों को परखने का और शिष्यों को गुरु की निधियाँ बटोरने का अवसर मिला। आत्मार्थियों का भी यह प्रबल लाभ–योग रहा कि पूज्य गुरुदेवश्री के बाद भी लगभग 43 वर्षों तक यह अमृत–वर्षा योग बदस्तूर जारी रहा।**

अब हमें यह देखना शेष है कि क्या दादा भी उतने ही सौभाग्यशाली रहे हैं जितने पूज्य गुरुदेवश्री दादा जैसे शिष्यों को पाकर साबित हुए। क्या आज भी हम आत्मार्थियों की काललब्धि उतनी ही प्रबल है? **क्या समाज को एक बार फिर हममें से कोई भूतबली और पुष्पदंत मिलेगा?..... तथास्तु!**

**ग्वालियर में सिखाई जा रही है, तत्त्वज्ञान के प्रचार की श्रेष्ठ शिक्षण पद्धति...**

# 55वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर समापन की ओर

## ध्वजारोहण एवं उद्घाटन समारोह

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा संस्थापित एवं श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की शृंखला के अंतर्गत 55वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर की वसुंधरा पर संपन्न हो रहा है, ज्ञान का यह महाकुंभ 21 मई से प्रारंभ होकर 7 जून, 2023 को समाप्त होगा।

21 मई 2023 को उद्घाटन समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण श्री वीरेन्द्रकुमार जैन परिवार, भिण्ड के करकमलों से हुआ। शिविर का उद्घाटन श्रीमती धनवन्ति जैन पत्तेवाला परिवार, शिवपुरी ने किया एवं मंच का उद्घाटन श्री महेशचन्द-सुशीला जैन परिवार, किलागेट, ग्वालियर ने किया। इस अवसर पर श्री सुनीलकुमार मंजू जैन, पूनम ब्रदर्स, ग्वालियर ने आचार्य कुन्दकुन्द; श्री जिनेन्द्रकुमार जैन, ग्वालियर ने आचार्य धरसेन; श्री सुशीलकुमार-रीता जैन, मांउटवर्ल्ड ने पण्डितप्रवर टोडरमलजी एवं डॉ. शीतलचन्द- अनिता जैन, ग्वालियर ने आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र अनावरण का सौभाग्य प्राप्त किया।

**शिविर के मुख्यामंत्रणकर्त्ता श्री मुकेशकुमार-बबीता, श्री आकाश-नीलांक्षा, अतिशय, अलेख्या जैन, जैना ज्वेलर्स परिवार, ग्वालियर रहे।**

सभा की अध्यक्षता श्री वीरेंद्रकुमार जैन, भिण्ड ने की इसके अतिरिक्त विशिष्ट अतिथियों में श्री अनूप मिश्रा (पूर्वमंत्री एवं सांसद), श्री मुन्नालाल गोयल (बीज निगम अध्यक्ष), श्री सतीश सिकरवार (विधायक), श्री विवेकनारायण शेजवलकर (सांसद), श्री श्यामलाल विजयवर्गीय मंचासीन थे। इस अवसर पर पण्डित कमलचंद जैन, पिडावा; पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली; डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर; श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुंबई एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर के अतिरिक्त मंचासीन अतिथियों के विशेष उद्बोधन प्राप्त हुए। सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर ने किया एवं स्वागत भाषण श्री सुनील शास्त्री, मुरार ने दिया।

## प्रशिक्षण की मुख्य कक्षाएँ

**बालबोध प्रशिक्षण** की शिक्षण पद्धति की कक्षाएँ श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर एवं सिद्धान्त की कक्षाएँ श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई व पण्डित कमलचन्द जैन, पिड़ावा ने लीं। प्रवेशिका प्रशिक्षण की सिद्धान्त तथा शिक्षण पद्धति की कक्षायें डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर; पण्डित निखिलेश शास्त्री, दलपतपुर व पण्डित गणतंत्र शास्त्री, आगरा ने लीं।

## मुख्य प्रवचन

प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के वीडियो प्रवचन के अतिरिक्त प्रातः **तत्त्वचिंतन** विषय पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली के एवं रात्रि में प्रथम प्रवचन में **चार अनुयोग** विषय पर बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के एवं द्वितीय प्रवचन में डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ व पण्डित संजय शास्त्री जेवर द्वारा जिनागम के विविध विषयों पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

## मुख्य कक्षाएँ

प्रतिदिन पौढ़ कक्षा डॉ. दीपक शास्त्री वैद्य, जयपुर; पण्डित रमेशचन्द जैन, लवाण व डॉ. अरुण शास्त्री बण्ड, जयपुर ने लीं। प्रातःकाल मुख्य कक्षाएँ बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना व डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ द्वारा संपन्न हुईं एवं सायंकाल गुणस्थान की कक्षा डॉ. प्रवीण शास्त्री, इंदौर ने ली।

## दोपहर व रात्रि में आयोजित व्याख्यान व कक्षायें

पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर; पण्डित राजकुमार शास्त्री, उदयपुर; पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर; पण्डित अनिल शास्त्री, भिण्ड; पण्डित राकेश शास्त्री, लोनी; पण्डित जिनचंद शास्त्री, हेरले; विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई; पण्डित संजय सेठी, जयपुर; पण्डित जितेन्द्र राठी, पुणे; पण्डित राजेन्द्र शास्त्री, खडेरी; डॉ. महावीर मांगुलकर, अकोला; पण्डित मनीष शास्त्री कहान, जयपुर; पण्डित निलय शास्त्री, आगरा; पण्डित विनीत शास्त्री, नागपुर; पण्डित राजेश शास्त्री, शाहगढ़; पण्डित सुनील शास्त्री, मुरार; पण्डित रजत शास्त्री, भिण्ड; पण्डित अशोक शास्त्री, इंदौर; डॉ. सुधीर शास्त्री, इंदौर; पण्डित संतोष शास्त्री, बक्स्वाहा; पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर; पण्डित संयम शास्त्री, नागपुर; पण्डित गौरव शास्त्री, जयपुर; पण्डित रीतेश शास्त्री, डदुका; पण्डित जिनेश शास्त्री, मुम्बई; पण्डित संदीप शास्त्री, डदुका; विवेक जैन, मुम्बई; पण्डित कुनाल शाह, मोटीझेर; श्रीमती लता जैन, देवलाली; श्रीमती मोना भारिल्ल, जयपुर; श्रीमती प्रेक्षा जैन, इंदौर; श्रीमती संध्या जैन, इंदौर; श्रीमती प्रीती जैन, खडेरी; श्रीमती नेहा जैन, कोटा; श्रीमती वर्षा जैन, जगतपुरा; कु. स्वस्ति जैन, मिरज द्वारा ली गईं।

# प्रशिक्षण शिविर के दौरान विशिष्ट कार्यक्रम

## विधान

**प्रवचनसार व नियमसार महामण्डल विधान :** इस अवसर पर 21 मई से 30 मई तक हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार मण्डल विधान सम्पन्न हुआ, जिसके मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री विजयकुमार–नीलम जैन ग्वालियर रहे। 31 मई से 6 जून तक नियमसार मण्डल विधान संपन्न हुआ, जिसके मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री अनिलकुमार–प्रमिला जैन एवं परिवार ग्वालियर थे।

विधान पण्डित संजय शास्त्री, जेवर; पण्डित अंकित शास्त्री, लूणदा; पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर; पण्डित देवेंद्र जैन, ग्वालियर; पण्डित दिव्यांश शास्त्री, अलवर; पण्डित अभिषेक शास्त्री, देवराहा एवं संदेश शास्त्री, दिल्ली के विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता गोपाचल स्वाध्याय ग्रुप, ग्वालियर; श्रीमती शान्तिदेवी, ग्वालियर; श्रीमती रश्मि जैन, गुडगॉव; श्री पद्मचन्द–वीना जैन, मुरार; श्रीमती मीना–ब्रजसेन जैन, ग्वालियर एवं श्री आदिनाथ मुमुक्षु मण्डल फालका बाजार, ग्वालियर रहे।

## अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद का अधिवेशन

दिनांक 22 मई, 2023 को दोपहरकालीन सत्र में अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

**ज्ञातव्य है कि सन 1944 में क्षुल्लक श्री गणेशप्रसादजी वर्णी द्वारा स्थापित इस संस्था का अध्यक्ष पद विद्वत्श्रेष्ठ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने सन 2001 से लेकर आजीवन सुशोभित किया।**

अधिवेशन की अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमार पाटील ने की, जिसमें श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुंबई; श्री सुनील शास्त्री, ग्वालियर की उपस्थिति में परिषद के अध्यक्ष डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली; कार्याध्यक्ष डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर; कोषाध्यक्ष पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर एवं संगठन मंत्री डॉ. अरविंद शास्त्री, सांगानेर नियुक्त किए गए।

विद्वत परिषद के महामंत्री डॉ. अखिल बंसल ने परिषद के नवीनतम उपक्रमों में विद्वत संदेश (त्रैमासिक शोध पत्रिका) की योजना प्रस्तुत की। गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश एवं महाराष्ट्र की कार्यकारिणी गठित हुई एवं तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, दिल्ली आदि प्रदेशों के प्रभारी नियुक्त किए।

अपने उद्बोधन में श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर ने सुझाव प्रस्तुत किया कि विद्वत परिषद जैनधर्म के आधारभूत सिद्धान्तों पर सक्षम विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा गोष्ठियाँ आयोजित कर, उनके आलेखों को पुस्तकाकार प्रकाशितकर, सम्पूर्ण समाज के समक्ष प्रस्तुत करे, ताकि समाज में उन सिद्धान्तों के प्रति जागृति एवं मतैक्य सृजन हो सके।

## गोष्ठी

### श्रुत सेवा का मंगल स्मरण

दिनांक 25 मई को दोपहरकालीन सत्र में डॉ. भारिल्ल के जीवंतरूप उनके साहित्य पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. भारिल्ल द्वारा जिनागम के विविध विषयों पर प्रस्तुत किए गए नवीनतम प्रमेय को प्रस्तुत किया गया एवं उनके द्वारा प्रदत्त आगम व युक्ति के समन्वय, चिंतनपूर्ण दृष्टिकोण एवं भाषा शैली पर विद्वानों द्वारा प्रकाश डाला गया।

संगोष्ठी में डॉ. संजय शास्त्री, दौसा द्वारा भरत का अंतर्द्वंद, डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ द्वारा क्रमबद्धपर्याय, डॉ. प्रवीण शास्त्री, इंदौर द्वारा नयचक्र, पण्डित गणतंत्र शास्त्री आगरा द्वारा आप कुछ भी कहो, पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर द्वारा समाधि व सल्लेखना, पण्डित जिनेश शास्त्री, मुंबई द्वारा निमित्त–उपादान, पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर द्वारा सत्य की खोज एवं पण्डित पवित्र शास्त्री, आगरा द्वारा धर्म के दसलक्षण पुस्तकों पर विशेष चर्चा की गई। सभी को एक कड़ी में बांधते हुए सत्र का संचालन पण्डित अंकुर शास्त्री, भोपाल ने किया।

इस अवसर पर श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर; पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली आदि मंचासीन थे। श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने बताया कि संगोष्ठी का उद्देश्य डॉ. भारिल्ल के प्राप्त साहित्य को गहराई से जानना एवं उसके पढ़ने की विधि समझना है।

## विशेष प्रस्तुति

### डॉ. भारिल्ल का जीवंतरूप उनका साहित्य

25 मई 2023 को संकल्प दिवस समारोह के दौरान 116 स्नातक विद्वानों ने डॉ. भारिल्लकी 116 कृतियों के कवरपेज के फोटो की तख्तियाँ लहराते हुए सभा मण्डप के पृष्ठ भाग से सभा मण्डप में प्रविष्ठ होकर, मंच तक पहुँचे और एकत्र हुए।

इसप्रकार डॉ. भारिल्ल की साहित्य साधना का दिग्दर्शन कराने वाला एक भव्य दृश्य उपस्थित हो गया, जिसने साधर्मियों को भावविभोर कर दिया। साहित्य के दिग्दर्शन कर लोगों ने यह महसूस किया कि वास्तव में डॉ. भारिल्ल आज भी हमारे बीच में उपस्थित है और सदा रहेंगे।

### 'भरत का अन्तर्द्वन्द्व' नृत्य नाटिका

25 मई को रात्रि में छोटे दादा द्वारा लिखित '**भरत का अन्तर्द्वन्द्व**' को एक लधु नृत्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया गया।

यह प्रस्तुति अहमदाबाद से मान्या जैन व अनुप्रेक्षा जैन द्वारा दी गई, जिसमें उन्होंने अनेक सुन्दर आकृतियों के माध्यम से कथा की विषयवस्तु को बखूबी प्रस्तुत किया।

**पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद द्वारा...**

## स्नातक प्रतिभा सम्मान

24 मई, 2023 को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद द्वारा आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले शास्त्री महाविद्यालयों के स्नातक विद्वानों को सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर ने की, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. एस. पी. शर्मा, ग्वालियर एवं श्री मुकेश जैन, जैना ज्वेलर्स मंचासीन थे, इसके अतिरिक्त उपस्थित शताधिक विद्वान व स्नातक समारोह के साक्षी बने।

परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर ने बताया कि इस समारोह का उद्देश्य स्नातकों की प्रतिभा का सम्मान करना और समाज को यह विश्वास दिलाना है कि तैयार हो रहे विद्वान न केवल धार्मिक क्षेत्र में; अपितु सामाजिक एवं शैक्षणिकस्तर पर भी अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहे हैं। सभा का संचालन पण्डित रूपेन्द्र शास्त्री, छिन्दवाड़ा ने किया।

**समारोह में निम्नलिखित सदस्यों को सम्मानित किया गया –**

**विशिष्ट सेवा सम्मान :** डॉ. श्रेयांशकुमार शास्त्री, जयपुर

**धार्मिक क्षेत्र में प्रभावना हेतु विशिष्ट सम्मान :** पण्डित अनिल शास्त्री, भिण्ड; विदुषी अल्पना भारिल्ल, मुंबई; पण्डित सुनील शास्त्री, ग्वालियर; पण्डित अलोक शास्त्री, कारंजा; पण्डित ऋषभ शास्त्री, उस्मानपुर; पण्डित निलय शास्त्री, आगरा; पण्डित श्रुतेश शास्त्री, नागपुर; पण्डित शुद्धात्म शास्त्री, ग्वालियर एवं पण्डित अभय शास्त्री, खैरागढ़

**शासकीय पदोन्नति हेतु :** पण्डित संजय शास्त्री, दौसा एवं पण्डित गजेन्द्र शास्त्री, जयपुर

**विश्वपटल पर जैनधर्म की पताका फहराने हेतु :** पण्डित अंकुर शास्त्री, भोपाल; पण्डित अच्युत्कांत शास्त्री, जसवन्तनगर एवं पण्डित जिनेश शास्त्री, मुम्बई

**शासकीय सेवा में चयन हेतु :** पण्डित जितेन्द्रकुमार शास्त्री, सिंगोली; पण्डित विवेक गडेकर, टीकमगढ़; पण्डित नियम शास्त्री, सिलवानी; पण्डित पंकज शास्त्री, बडामलहरा; विदुषी अनु शास्त्री, दलपतपुर; पण्डित अभिषेक शास्त्री, कोलारस; पण्डित नरेश जैन, भगवाँ; पण्डित निशंक शास्त्री, टीकमगढ़; पण्डित अर्पित शास्त्री, ललितपुर; पण्डित पंकज शास्त्री, बक्सवाहा; पण्डित सनत शास्त्री, बक्सवाहा; पण्डित रूपेंद्र शास्त्री, छिंदवाड़ा; पण्डित रत्नेश शास्त्री, भगवा; पण्डित नीलेश शास्त्री, घुवारा; पण्डित समकित शास्त्री, दलपतपुर

**PHD करने हेतु :** पण्डित तपिश शास्त्री, उदयपुर

**IT क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु :** पं. समकित शास्त्री, किशनगढ़

**JRF प्राप्त करने हेतु :** पण्डित पवित्र शास्त्री, आगरा

## परीक्षा परिणाम

**श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर**

**सत्र : 2022–23**

अनमोल जैन, राघौगढ़

सम्यक जैन, दिल्ली

आर्जव जैन, खड़ैरी

माध्यमिक शिक्षा वोर्ड, अजमेर राजस्थान द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम में महाविद्यालय के विद्यार्थियों को अतिशय सफलता

- **अनमोल जैन पिताश्री अशोक जैन, राघौगढ़ ने प्रथम स्थान**
- **सम्यक जैन पिताश्री पंकज जैन, दिल्ली ने द्वितीय स्थान**
- **आर्जव जैन पिताश्री आशीष जैन, खड़ेरी ने तृतीय स्थान**

04 छात्र 85–100%, 11 छात्र 75–84%, 08 छात्र 65–74% एवं 03 छात्र 60–64% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए हैं।

एतदर्थ जैन पथप्रदर्शक परिवार विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में अग्रणी रहने की भावना भाता है।

## विदेश कार्यक्रम : 2023

पण्डित विपिन शास्त्री, नागपुर इस वर्ष भी **जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका JAANA** द्वारा अमेरिका के विविध नगरों में धर्मप्रचारार्थ जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्न प्रकार रहेगा –

02 जून से 08 जून तक **टोरंटो,** 09 जून से 14 जून तक **म्यामी,** 15 जून से 22 जून तक **डलास,** 23 जून से 30 जून तक **न्यूजर्सी,** 01 जुलाई से 04 जुलाई तक **ऑरलेंडो,** 05 जुलाई से 11 जुलाई तक **क्लीवलैंड,** 12 जुलाई से 14 जुलाई तक **मिनियापोलिस,** 15 जुलाई से 19 जुलाई तक **शिकागो।**

**जिन भारतवासी बंधुओं के परिवार या सम्बन्धी उक्त स्थानों पर रहते हो, वह उन्हें सूचित कर देवें।**

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

## श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न

**ध्रुवधाम बाँसवाड़ा :** श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में राजस्थान की सुप्रसिद्ध नगरी बाँसवाड़ा के **रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम** में पुनर्निर्मित नवीन मानस्तंभ में श्री जिनप्रतिमाओं की स्थापना हेतु श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन 21 मई से 24 मई 2023 तक किया गया।

पाषाण से परमात्मा बनाने वाली यह पंचकल्याणक की विधि प्रतिष्ठाचार्य पंडित रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर तथा सहप्रतिष्ठाचार्य बा. ब्र. मनोज जैन, जबलपुर; पण्डित अशोक जैन, उज्जैन; पण्डित ऋषभ शास्त्री, छिंदवाड़ा; पण्डित सुबोध शास्त्री, शाहगढ; पण्डित अश्विन शास्त्री नाणावटी एवं पण्डित सचिन शास्त्री, चैतन्यधाम द्वारा सम्पन्न हुई। निर्देशन पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर एवं सहनिर्देशन पण्डित रितेश शास्त्री, डडूका ने किया।

इस अवसर पर प्रवचनकार विद्वानों में पण्डित राजेंद्र जैन, जबलपुर; पण्डित देवेन्द्र जैन, विजौलिया; पण्डित विपिन शास्त्री शास्त्री, मुंबई; पण्डित नागेश जैन, पिडावा एवं पण्डित संदीप शास्त्री, दिल्ली के स्थानीय विद्वानों का लाभ मिला।

समस्त कार्यक्रम श्री वसंतभाईजी दोशी, मुम्बई एवं श्री अनंत भाईजी सेठ, मुम्बई के राष्ट्रीय नेतृत्व में, प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़ के निर्देशन में संपन्न हुआ।

## श्रुतपंचमी के मंगल महोत्सव पर

**जयपुर :** राजस्थान जैन साहित्य परिषद द्वारा आयोजित तीन दिवसीय श्रुत पंचमी महामंगल महोत्सव के दूसरे दिन मंगलवार को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जयपुर महानगर व वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल द्वारा षटखण्डागम महामण्डल विधान का आयोजन बापूनगर स्थित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में किया गया।

विधान के मुख्य आयोजनकर्त्ता हीराचंद बैद, जयपुर एवं निर्देशक पंडित रमेशकुमार गंगवाल थे। विधान पंडित रिमांशु शास्त्री एवं पण्डित अनेकांत शास्त्री के सहयोग से हुआ जिसका मर्म डॉ. विमलकुमार शास्त्री, सांगानेर ने बतलाया।

महोत्सव के अंतिम दिन बुधवार को विशाल जिनवाणी रथयात्रा निकाली गई जो जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर से प्रारम्भ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होती हुई मनिहारों के रास्ते में स्थित दिगम्बर जैन मंदिर संघीजी पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुई। इस मंगलमय प्रसंग पर शास्त्र सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। **– मंत्री : हीराचन्द बैद, जयपुर**

### मांगलिक कार्यक्रम

**पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में**
**श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय ट्रस्ट, महरौनी एवं**
**श्री कुन्दकुन्द दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, टीकमगढ़ व बानपुर**
**के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित**

**श्री १००८ नेमीनाथ जिनबिम्ब**

## पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

**दिनांक 19 जून से 23 जून, 2023 तक**

19 जून गर्भ कल्याणक
20 जून जन्म कल्याणक
21 जून तप कल्याणक
22 जून ज्ञान कल्याणक
23 जून मोक्ष कल्याणक

प्रतिष्ठाचार्य
ब्र. अभिनन्दन शास्त्री, खनियांधाना

**कार्यक्रम स्थल**
शौरीपुर नगर, सरस्वती शिशु मन्दिर, नाराहट रोड़ महरौनी

**भवदीय :** श्री नेमीनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, महरौनी, टीकमगढ़, बानपुर।

**सम्पर्क सूत्र :** 8770487588, 9453661666

## बाल शिक्षण शिविरों का आयोजन

**जयपुर :** अखिल भारतीय वीतराग विज्ञान पाठशाला समिति के तत्त्वावधान में दिनांक 26 मई से 1 जून 2023 तक ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन पूजन, बाल कक्षाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह शिविर पण्डित मंथन गाला, जयपुर व महिला मंडल, बापूनगर के सहयोग से संपन्न हुआ।

**बस्तबाड (कर्नाटक) :** यहाँ प्रथमवार 28 से 30 अप्रैल 2023 तक तीन दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बालकों को पूजन एवं जैनधर्म की प्रारम्भिक बातें सिखाई गईं। इस शिविर में 530 बालकों ने भाग लिया।

**अन्गोल (कर्नाटक) :** 15 से 20 मई 2023 तक शिविर को आयोजन हुआ, जिसमें 450 विद्यार्थियों सहित 200 साधर्मियों ने जीवन में तत्त्वज्ञान को अपनाया। ज्ञातव्य है कि यहाँ विगत सात वर्षों से शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

**हलका (कर्नाटक) :** यहाँ प्रथमवार 22 से 26 मई 2023 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 350 बच्चों ने 6 द्रव्य, 7 तत्त्व, 5 पाप, 4 कषाय आदि विषयों का अध्यापन किया गया।

ज्ञातव्य है कि कर्नाटक प्रान्त में धर्मध्वज फहराने वाले **पण्डित अनेकान्त शास्त्री, उगार** एवं **पण्डित मिथुन शास्त्री, बेलगॉव** प्रतिवर्ष नए–नए स्थानों पर बाल शिविरों का आयोजन किया करते है।

02 जून, 2023, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

**जिनशासन प्रभावना में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए...**

# मरणोपरांत भव्य सम्मान समारोह

**25 मई, 2023 को आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर समिति, ग्वालियर द्वारा जिनशासन प्रभावना में अपूर्व योगदान हेतु समाज की विभूतियों को मरणोपरांत सम्मानित किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री आर.डी. जैन, ग्वालियर ने की एवं मुख्य अतिथि ग्वालियर के एस.पी. श्री राजेश चंदेल के अतिरिक्त शिविर आयोजन समिति के श्री मुकेश जैन, श्री सुशील जैन, श्री अर्जित जैन, श्री सुनील शास्त्री, श्री विजय जैन उपस्थित थे।**

**तत्त्ववेत्ता**
**डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल**
को विविध विधाओं में श्रुत साधना करने, प्रभावना में अग्रणी संस्था टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के आधार स्तंभ होने, जैनधर्म को विश्वपटल पर अंकित करने, अपनी सूझबूझ, दूरदर्शिता व रीति-नीति से मुमुक्षुसमाज के संगठन व उन्नयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने एवं विद्वत परंपरा को पुनर्जीवित कर नए आयाम देने हेतु मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

**अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर** को श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का अभूतपूर्व प्राचार्यत्व करने, जैनकथा साहित्य को एक नया आयाम देने, गूढ़ रहस्यों को कथात्मक शैली में परोसकर जिनधर्म सेवा करने हेतु मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

**मंगलायतन के स्वप्नदृष्टा श्री पवनजी जैन, अलीगढ़** को वीतरागी जिनशासन की मंगल प्रभावना में उल्लेखनीय योगदान देने, कर्तव्यनिष्ठता से मुमुक्षुसमाज में मुख्य स्थान प्राप्त करने, मंगलायतन का भव्य निर्माण एवं सफल संचालन करने हेतु मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

**अध्यात्मवेत्ता**
**डॉ. संजीवकुमारजी गोधा**
को वीतरागी जिनशासन प्रभावनारथ को आगे बढ़ाने में अविस्मरणीय योगदान देने, सरल, रोचक शैली से गूढ़ विषयों को जनसामान्य तक पहुँचाने, कोरोना महामारी के काल में शांतिदूत बन तत्त्वज्ञान को घर-घर तक पहुँचाने, यूट्यूब पर प्रवचनों की शृंखला के माध्यम से समाज को अनुपम निधि देने हेतु मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

**ढाईद्वीप जिनायतन के स्वप्नदृष्टा श्री मुकेशजी जैन, इंदौर** को विश्व की अद्वितीय रचना ढाईद्वीप जिनायतन के निर्माण के भागीरथी होने, जिनशासन की प्रभावना के महायज्ञ में महत्त्वपूर्ण योगदान देने हेतु मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

**कुशल नियोजक पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा** को आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का प्राचार्यत्व करने, सैकड़ों शास्त्री विद्वानों के उन्नयन में अपना जीवन अर्पित करने, पंचकल्याणक में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने हेतु मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

संस्थापक सम्पादक :
**अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**

सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
सह-सम्पादक : **पीयूष जैन**
प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
**E-Mail :** veetragvigyanjpp@gmail.com

**प्रकाशन तिथि : 20 मई 2023**

**प्रति,**